REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 8 | MAY - 2024

भारतीय राजनीति में क्षेत्रवाद की समस्या एवं समाधान : एक अध्ययन

डॉ. दिनेश कुमार
सहायक प्रध्यापक (अतिथि),
राजनीति विज्ञान विभाग, अनुग्रह नारायण सिंह कॉलेज, बाढ़।

शोध सारांशः

क्षेत्रवाद एक देश या देश के छोटे से क्षेत्र से है, जो आर्थिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक आदि कारणों से अपने पृथक अस्तित्व के प्रति जागरूक है। अथवा क्षेत्र विशेष में रहने वाले लोगों की उस भावना या प्रयत्न से है जो अपने क्षेत्र विशेष के लिए अधिक से अधिक आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक लाभ प्राप्त करने के एकता से है जिसके आधार पर वह अपने आपको दूसरों से पृथक मानते है और अपने इस क्षेत्र के प्रति श्रेष्ठता का भाव रखते हैं अथवा ऐसा सोचते हैं कि राष्ट्रीय सरकार द्वारा उनके क्षेत्र विकास की ओर ध्यान नहीं दिया गया है और विकास कार्यों में उनके क्षेत्र को अधिक प्राथमिकता दी जानी चाहिए। भारतवर्ष की स्वतंत्रता के समय अनेक रियासतें अस्तित्व में थी जिनका अपना–अपना भौगोलिक, सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक महत्व था जब अंग्रेज भारत से जा रहे थे तब कैबिनेट मिशन द्वारा रियासतों को इस बात के लिए स्वतंत्र कर दिया था कि वे चाहे तो भारत संघ में शामिल हो, चाहे तो पाकिस्तान में या फिर स्वतंत्र रहे। अधिकांश रियासतें भारत संघ में ही सम्मिलित हुई थी। लेकिन स्वतंत्रता के पश्चात इनकी स्थिति और खराब होने लगी जिसके कारण क्षेत्र विशेष के लोगों में क्षेत्रवाद की भावना देने बढ़ने लगी।

शब्द कुजी :– क्षेत्रवाद, राजनीति, सांस्कृतिक, भारतीय।

प्रस्तावना :

क्षेत्रीयता भारतीय राजनीति का प्रमुख निर्धारक तत्व है। इस विचार की समीक्षकों ने अपने ढंग से परिभाषा देने का प्रयास किया है। अभी तक क्षेत्रीयता व क्षेत्रवाद की कोई निष्चित परिभाषा नहीं दी जा सकी है। इकबाल नारायण ने लिखा है कि भारतीय राजनीति का एक प्रमुख निर्धारक तत्व क्षेत्रीयता है। जिसके कारण लोग भारतीय संघ की तुलना में उस क्षेत्र व राज्य विशेष को अधिक महत्व देते हैं, जिसमें वे रहते हैं। मोरिस जॉन ने अपनी पुस्तक भारतीय शासन राजनीति में लिखा है कि क्षेत्रवाद व भाषावाद के सवाल भारतीय राजनीति में इतने ज्वलनषील मुद्दे प्रश्न रहे है और भारत के हाल के राजनैतिक इतिहास की घटनाओं के साथ उनका इतना गहरा सम्बन्ध रहा है कि अक्सर ऐसा लगता है कि यही राष्ट्रीय एकता की सम्पूर्ण समस्या है। जहां तक क्षेत्रवाद के इतिहास का प्रश्न है तो यह भारतीय स्वतंत्रता वह रियासतों के भारतीय संघ में शामिल होने के साथ जुड़ा हुआ मुद्दा है।

शोध अध्ययन के उदेद्श्यः

1. क्षेत्रवाद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि अध्ययन करना।
2. भारतीय राजनीति में क्षेत्रवाद के प्रभाव का अध्ययन करना।

3. क्षेत्रवाद की समस्याओं का अध्ययन करना।
4. क्षेत्रवाद की समस्याओं को रोकने के उपायों का अध्ययन करना।

परिकल्पनाः

1. क्या भारतीय राजनीति में क्षेत्रवाद अभी भी एक समस्या बनी हुई है?
2. क्षेत्रवाद राष्ट्रीय अखण्डजा के मार्ग में खतरा है।
3. भारत सरकार के द्वारा इसके रोकथाम हेतु जो प्रयास किये गये, वर्तमान में उसमें कमी आई है।

शोध विधि व आंकड़ों का संग्रहणः

क्षेत्रवाद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, भारतीय राजनीति में क्षेत्रवाद के प्रभाव, क्षेत्रवाद की समस्याओं एवं समस्याओं को रोकने के उपायों का अध्ययन एवं विश्लेषण करने के लिए द्वितीयक आंकडों का प्रयोग किया गया है। आंकडों को विभिन्न पुस्तकों पत्र–पत्रिकाओं समाचार पत्रों आदि से संग्रहण किया गया है।

क्षेत्रवाद की पृष्ठभूमिः

भावात्मक एकता– क्षेत्रवाद एक क्षेत्र विशेष में रहने वाले लोगों की भावनात्मक एकता का सूचक है। जो अपनी भावना विचारधारा तथा दृष्टिकोण के माध्यम से अपने क्षेत्र का समर्थन करते हैं तथा विभिन्न परिस्थितियों में अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर क्षेत्र विशेष के पक्ष में प्रबलता के साथ प्रस्तुत करते हैं या करने का प्रयास करते हैं।

समान तत्व– समान तत्व यह भावनात्मक समान संस्कृति समान भाषा सम्मान बोली सम्मान रीति रिवाज व समान धार्मिक आर्थिक आदि अनेक तत्वों से उत्पन्न होती है जिनकी क्षेत्र विशेष में एकता पाई जाती है। पृथकता की भावना को जन्म देना–क्षेत्रवाद का यह भी एक प्रमुख लक्षण है कि यह पृथकता की भावना को जन्म देती है वर्तमान में भारत जिस प्रकार से क्षेत्रीय वाद के रोग से ग्रस्त है। उसका लक्षण पृथकतावाद है। इस समय कश्मीर में जे के एल एफ तथा हुर्रियत कॉन्फ्रेंस असम में बोडो संगठन या उल्फा पंजाब में सिख आतंकवाद नागालैंड में नागा नेशनल फ्रंट, तमिलनाडु में डीएमके तथा एआईडीएमके त्रिपुरा में आतंकवादी संगठन त्रिपुरा उपजाति युवा परिषद, मिजोरम में मिजो नेशनल फ्रंट आदि ऐसे संगठन है जो इसी क्षेत्रवाद के कारण अपने–अपने प्रथम स्वतंत्र राज्यों की मांग कर रहे हैं जो राष्ट्रीय एकता व अखंडता के लिए काफी घातक सिद्ध हो रहे हैं।

उग्र आंदोलन– क्षेत्रवाद की इस बढ़ती हुई प्रवृत्ति के कारण उग्र आंदोलन को बढ़ावा मिल रहा है। पिछड़े क्षेत्र अपना समुचित विकास तथा अधिक स्वायत्तता की मांग को लेकर इस प्रकार के साधनों का इस्तेमाल करते हैं। जैसे बिहार में झारखंड तथा उत्तर प्रदेश में उत्तरांचल मध्यप्रदेश में छत्तीसगढ़ पृथक राज्य की मांग को लेकर लंबे समय तक आंदोलन चला और आज भी अनेक क्षेत्रों से पृथक राज्यों की मांग हेतु आंदोलन चलाए जा रहे हैं।

राष्ट्रीय हितों की उपेक्षा– क्षेत्रवाद की प्रवृत्ति राष्ट्रीय हितों के स्थान पर क्षेत्रीय या स्थानीय हितों को ज्यादा महत्व देती है।

क्षेत्रवाद के प्रति विशिष्ट भावना– क्षेत्रीयवाद एक सीखा हुआ व्यवहार है। प्रत्येक क्षेत्र की एक संस्कृति होती है वहां के लोगों में अपने क्षेत्र के प्रति एक विशिष्ट भावना होती है। जिसे वहां के नागरिक सीखते हैं। यह उन्हें वंशानुगत नहीं मिलती है।

क्षेत्रवाद की मात्रा– क्षेत्रवाद की मात्रा में अंतर पाया जाता है। उग्र क्षेत्रवाद तथा दूसरा उदार क्षेत्रवाद।

क्षेत्रवाद के कारण

भौगोलिक कारण– भौगोलिक दृष्टि से भारत के कुछ राज्य बहुत बड़े हैं तो कुछ राज्य बहुत छोटे हैं जहां तक एक तरफ उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश तथा राजस्थान जैसे विशाल राज्य हैं। तो वहीं मिजोरम, नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश और मणिपुर जैसे छोटे राज्य हैं। अतः छोटे राज्यों की जनता में यह आम धारणा बन गई है

कि वह बड़े राज्यों की तुलना में असहाय और उपेक्षित है। अतः उनकी क्षेत्रीय षक्ति की भावना जोर मारती रहती है जो अनेक विकारों और दुष्प्रभावों के रूप में प्रकट होती है। इसके अलावा बड़े राज्यों के क्षेत्र विशेष में यह धारणा पनप रही है कि इनके साथ रहने से उनका समुचित विकास अन्य क्षेत्रों की तुलना में नहीं हुआ है।

सांस्कृतिक विभिन्नता– भारत के राज्यों में सांस्कृतिक विभिन्नता के कारण क्षेत्रवाद को प्रोत्साहन मिल रहा है। कुछ राज्य अपनी भाषा व संस्कृति पर बहुत गर्व करते हैं। इनके अलावा इसी के आधार पर वहां के क्षेत्रीय राजनीतिक दल राजनीति कर रहे हैं। जिसमें वे काफी हद तक सफल भी हुए हैं जैसे मद्रास में द्रविड़ मुन्नेत्र कड़गम ने भारत संघ से अलग होने की बात कही थी। आंध्र प्रदेश में तेलुगू देशम की सरकार तेलुगु भाषा व संस्कृति के आधार पर अपनी राजनीति चला रही है। इसी प्रकार असम में असम गण परिषद अपनी संस्कृति की रक्षा का नारा बुलंद कर रही है। महाराष्ट्र में शिवसेना मराठी संस्कृति के उत्थान की बात करती है और उसका मत है कि महाराष्ट्र मराठों वालों के लिए है।

राज्यों का पुनर्गठन– भारत की स्वतंत्रता के समय यहां अनेक रियासतें थी जिनका अपना स्वतंत्र अस्तित्व था लेकिन बाद में इनका विलीनीकरण इस प्रकार किया गया कि इनका चहुंमुखी विकास होना कठिन हो गया। जिससे यह क्षेत्र और अधिक बिछड़ने लगे और आज इन रियासतों के बाशिंदों में यह धारणा विद्यमान है कि यदि उनका पृथक राज्य होता तो अधिक लाभ हुए गर्व की स्थिति में होते।

भाषागत विविधता– भारत में अनेक भाषाएं बोली जा रही है या जाती हैं। यदि भारत को भाषा की खान कहे तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी राजस्थानी में एक कहावत है कि कोसा पानी बदल और 12 कोसा बोली परंतु इसके कारण क्षेत्रीय ताकि भावना को बढ़ावा मिलता है। जिस का दुरुपयोग करते हुए विभिन्न राजनीतिक दलों ने राजनीति का फायदा उठाने का प्रयास किया है जैसे तमिलनाडु में डीएमके का आधार ही तेलुगु है अंग्रेजी भाषा है। जो राष्ट्रीय भाषा हिंदी को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं विशेष हाल ही में एआईएडीएमके नेता कुमारी जयललिता ने यह आरोप लगाया कि हिंदी भाषा उन पर जबरदस्ती थोपी जा रही है इसी प्रकार आंध्र प्रदेश में तेलुगू देशम का मूल आधार ही तेलुगु भाषा है इस तरह भारत के प्रत्येक राज्य की अपनी अपनी भाषा है। जिसके आधार पर अनेक भाषाएं राज्यों का निर्माण हुआ है जैसे मुंबई प्रांत में गुजराती भाषा क्षेत्र को निकालकर गुजरात में मराठी भाषा के आधार पर महाराष्ट्र मराठों वालों के लिए है।

आर्थिक विषमता– भारत में कुछ राज्यों का आर्थिक विकास तीव्र गति से हुआ है तो कुछ क्षेत्र आर्थिक विकास की दृष्टि से पिछड़े हुए हैं। इससे इन क्षेत्रों में असंतोष व्यापक हुआ है और क्षेत्रीयवाद की भावना बनती है। आंध्र प्रदेश में तेलंगाना राजस्थान में दक्षिणी पूर्वी क्षेत्र बिहार में छोटानागपुर तथा महाराष्ट्र में विदर्भ क्षेत्र आर्थिक दृष्टि से काफी पिछड़े हुए हैं। जिसके कारण आंध्र प्रदेश में तेलंगाना महाराष्ट्र में विदर्भ उत्तर प्रदेश में हरित प्रदेश पश्चिमी बंगाल में गोरखालैंड जम्मू कश्मीर में लद्दाख आदि राज्यों की स्थापना के लिए प्रबल जन आंदोलन चल रहे हैं।

राजनीतिक कारण– राजनीतिक कारणों से भी प्रादेशिक ताकि मांग बढ़ी है कुछ राजनीतिज्ञों की यह चिंतन शैली रही है कि यदि पृथक राज्य बन जाए तो राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति सरलता से हो सकेगी। अकाली दल डीएमके तेलुगू देशम आदि प्रादेशिक दलों ने भी राजनीतिक कारणों से प्रादेशिक ता को प्रोत्साहन दिया है। इसी तरह झारखंड मुक्ति मोर्चा द्वारा जो झारखंड राज्य की स्थापना के लिए आंदोलन चलाया जा रहा था। उसके पीछे राजनीति कारण ही था जिसमें उन्हें सफलता मिली अजीत सिंह द्वारा उत्तर प्रदेश में एक पृथक हरित प्रदेश की मांग हुई जो राजनीति से प्रेरित होकर की जा रही हैं।

जाति के कारण– जाति के आधार पर भी क्षेत्रीयता की प्रवृत्ति बढ़ी है जिन क्षेत्रों में एक ही जाति की प्रधानता है। वहां क्षेत्रवाद और अधिक उग्र दिखाई दिया है हरियाणा और महाराष्ट्र में क्षेत्रीयतावाद की प्रवृत्ति के विकास में जाति एक भयावह तत्व रहा है।

प्रभावशाली क्षेत्रीय नेता– प्रभावशाली क्षेत्रीय नेताओं के उदय और उनकी व्यक्तित्व के करिश्मे से भी क्षेत्रीयता को बढ़ावा मिला है। तमिलनाडु में अन्नादुरई और एमजी रामचंद्रन, आंध्र प्रदेश में एनटी रामा राव, जम्मू–कश्मीर में शेख अब्दुल्लाह, महाराष्ट्र में बालासाहेब ठाकरे, उड़ीसा में बीजू पटनायक के उदाहरण गिनाए जा सकते हैं।

नियोजन में असफलता– स्वतंत्र भारत में नियोजन का मार्ग अपनाकर बेरोजगारी, गरीबी आर्थिक विषमता आदि को दूर करने के संकल्प तो बार–बार दोहराए गए हैं। लेकिन संकीर्ण स्वार्थों की राजनीति के

कारण लक्ष्य प्राप्ति नहीं हो पाई और जनता में निराशा का प्रसार हुआ। इन परिस्थितियों में संगीन क्षेत्रीयता का पनपना स्वाभाविक है। प्रारंभ में राष्ट्रीय हितों की तुलना में क्षेत्रवाद का जो बीज पड़ा वह समय के साथ एक विशाल वृक्ष के रूप में विकसित हो गया।

भारतीय राजनीति में क्षेत्रवाद की समस्याएं एवं चुनौतियॉ

वर्तमान परिपेक्ष में क्षेत्रीयतावाद भारतीय राजनीति पर बहुत ज्यादा हावी हो चुका है। आम आदमी में क्षेत्रवाद की भावना कूट—कूट कर भरी हुई है। अधिकारी गण तथा राजनेता अपने क्षेत्र विशेष के हितों को बहुत महत्व देते हैं। जिसके कारण क्षेत्रवाद एक गंभीर समस्या के रूप में उभर कर सामने आ रही है यह भारत वर्ष रूपी जंगल में वट वृक्ष की भांति अनियंत्रित रूप से बढ़ रही है। इसकी जड़ें इतनी फैल चुकी हैं कि इन को समाप्त करना असंभव सा हो गया है। क्षेत्रवाद के कारण भारतीय राजनीति में निम्न समस्याएं उत्पन्न हो रही हैः

❖ **पृथक राज्यों की मांग—** क्षेत्रवाद रूपी पेड़ में से पृथक राज्य रूपी फल निकल कर सामने आया है वर्तमान में अनेक राज्यों में भारत संघ से पृथक होने की मांग की जा रही है। इसके लिए यह हिंसात्मक एवं आतंकवादी साधनों का प्रयोग कर रहे हैं। भारत में सर्वप्रथम 1953 में तेलुगु भाषा के आधार पर आंध्र प्रदेश का निर्माण किया गया अतः इस प्रकार की भी गठन काली शक्तियों से निपटने के लिए अक्टूबर 1963 में 16वें संविधान संशोधन द्वारा संसद को यह अधिकार दिया गया कि यदि कोई व्यक्ति भारत की संप्रभुता व अखंडता के लिए खतरा पैदा करता है। तो उसे दंडित कर सकती है तथा संसद व विधान मंडल के सदस्य संविधान के प्रति निष्ठा तथा प्रभुसत्ता की रक्षा की शपथ ले वर्तमान में भारत के अग्र लिखित राज्य समस्या से ग्रसित हैं। जम्मू—कश्मीर में जेकेएलएफ, पंजाब में खालिस्तान निर्माण के लिए सिख आतंकवाद, मिजोरम में जो नेशनल पार्क, नागालैंड में नेशनल आर्मी, असम में उल्फा है। इन आतंकवादी संगठनों को पाकिस्तान व चीन का खुले रूप से आर्थिक व सैनिक समर्थन मिल रहा है। केंद्र सरकार इन आतंकवादी गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए प्रयासरत रही हैं। जैसे 1985 में जो नेता लडेंगा और प्रधानमंत्री राजीव गांधी के बीच समझौता हुआ जिसके मुताबिक मिजोरम को पूर्ण राज्य का दर्जा दिया गया। और आतंकवादी गतिविधियों पर अंकुश लगाया जा सका। इसी प्रकार 1991 में पंजाब में विधानसभा के चुनाव करवाए गए और बेअंत सिंह के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी की जनहित वाली सरकार सत्ता में आई जिसके पश्चात वहां पर आतंकवादी गतिविधियों पर अंकुश लगाने में काफी सफलता मिली। इसी तरह 2002 में कश्मीर में चुनाव करवाए गए और मुफ्ती मोहम्मद सईद के नेतृत्व में सरकार बनी, जो राष्ट्र विरोधी गतिविधियों को रोकने के लिए प्रयासरत रही।

❖ **विभिन्न राज्यों के बीच सीमा विवाद—** क्षेत्रीयता के कारण आज विभिन्न राज्यों के बीच सीमा विवाद अपनी पराकाष्ठा पर है। प्रत्येक राज्य अपनी प्रतिष्ठा के कारण सीमा विवाद के समाधान के लिए झुकना नहीं चाहता। वर्तमान में कर्नाटक और महाराष्ट्र के बीच बेलगांव को लेकर विवाद है। जिसके तहत बेलगांव में मराठी भाषा लोगों को बहुलय है। अतः महाराष्ट्र यह चाहता है कि यह क्षेत्र उसको मिल जाए परंतु इसके बदले में कर्नाटक को 260 गांव को दे दिए जाएंगे। इसी प्रकार हरियाणा में पंजाब के बीच चंडीगढ़ का विवाद भी प्रमुख रहा है। इस विवाद का समाधान करने के लिए 19 जनवरी 1970 को यह घोषणा की गई चंडीगढ़ को दिया जाए। इसके बदले में हरियाणा को फाजिल्का सहित 114 गांव हिंदी वासी गांव दिए जाएंगे लेकिन इसका कोई परिणाम नहीं निकला।

❖ **पृथक राज्य की मांग—** कुछ क्षेत्रों द्वारा अपने लिए पृथक राज्य की मांग के आंदोलन भी भारतीय राजनीति को उद्वेलित करते रहे हैं। महाराष्ट्र गुजरात और पंजाब राज्य की स्थापना मुख्य तो ऐसे ही आंदोलनों का परिणाम है असम के उत्तरी कछार क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के आंदोलन के परिणाम स्वरूप 1972 में मेघालय की स्थापना हुई। महाराष्ट्र में विदर्भ विदर्भ पृथक राज्य की स्थापना की मांग उत्तर प्रदेश में उत्तरांचल की स्थापना 2000 में कर दी गई है। वह बुंदेलखंड एवं हरित प्रदेश की मांग बंगाल में गोरखालैंड राजस्थान में मरो प्रदेश गुजरात में कच्छ आंध्र प्रदेश में तेलंगाना जैसे आदि अनेक पृथक राज्यों की स्थापना की मांग बढ़ रही है। इन क्षेत्रों के लोगों का कहना है कि वर्तमान स्थिति में उनके क्षेत्र क्षेत्र के विकास की उपेक्षा की गई है इसलिए हमारा समुचित विकास जब तक नहीं होगा तब तक कि पृथक राज्यों की स्थापना नहीं कर दी जाए।

❖ **केंद्र शासित क्षेत्रों द्वारा पूर्ण राज्य की मांग—** कुछ केंद्र शासित क्षेत्र भी पूर्ण राज्य की मांग कर रहे हैं हिमाचल प्रदेश मणिपुर त्रिपुरा में मांग काफी समय तक रही है। फलस्वरूप इन्हें पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ

दिल्ली गोवा दमन और दीव पांडिचेरी में भी पूर्ण राज्य का दर्जा दिए जाने की मांग उठती रही है। सन 1985 के बाद मिजोरम गोवा और अरुणाचल प्रदेश इसी के चलते पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त कर सके हैं।

❖ **नदी जल विवाद**– क्षेत्रवाद के कारण जल विवाद और अधिक गहरा हो गया है। नर्मदा नदी के जल प्रयोग पर मध्यप्रदेश, गुजरात और राजस्थान के बीच गहरा विवाद रहा जिसका बहुत कुछ समय सीमा तक समाधान हो चुका है। राजस्थान और पंजाब के बीच भांगड़ा जल विद्युत के उपयोग पर और हिमाचल प्रदेश से राजस्थान के बीच पोंग बांध के प्रश्नों पर भी विवाद उठे हैं। जिसका कुछ न कुछ समाधान हुआ है। यमुना नदी के जल विवाद पर हरियाणा में दिल्ली के बीच में विवाद जारी है। वर्तमान में सबसे महत्वपूर्ण कावेरी नदी जल विवाद है जो कर्नाटक और तमिलनाडु के बीच है। जो काफी लंबे समय से तूल पकड़ा हुआ है। यद्यपि इसके लिए कावेरी जल विवाद अधिकरण की स्थापना की गई है। जिसने अपना निर्णय भी दिया है। परंतु इस को मारने के लिए कोई राज्य तैयार नहीं है 1996 में ऐसा लग रहा था कि सत्तारूढ संयुक्त मोर्चा सरकार गिर जाएगी क्योंकि दोनों राज्यों की सरकारें मोर्चों के घटक दल थे यद्यपि विवाद के समाधान के लिए दोनों राज्यों के मुख्यमंत्रियों के बीच बैठकर हो चुकी है परंतु निर्णय कुछ नहीं रहा कावेरी विवाद का मुद्दा वर्तमान भारतीय राजनीति में छाया हुआ है। और रोजाना कर्नाटक तमिलनाडु की सरकारें एक–दूसरे पर आरोप–प्रत्यारोप लगाती रहती हैं।

❖ **क्षेत्रीय भाषाई विवाद**– भारत में भाषाई दंगे होते रहते हैं जिनमें सैकड़ों लोग मारे जाते हैं। असम और मुंबई में भाषा के ही नाम पर लड़े गए। कोलकाता में गैर बंगालियों के प्रति द्वेष की भावना भी इसी बुनियाद पर उतारी जाती है। महाराष्ट्र में शिवसेना सरकार ने गैर मराठी भाषा लोगों को निकालने का अभियान चलाने की घोषणा की थी। कुछ विचारकों का मत है कि भाषा के महत्व इसका प्रमुख आधार नहीं बनाया जा सकता।

❖ **क्षेत्रीय दलों का निर्माण में भारतीय राजनीति पर प्रभाव**– वर्तमान में भारतीय राजनीतिक अस्थिरता के दौर से गुजर रही है उसके लिए काफी हद तक क्षेत्रवाद जिम्मेदार है भारत में जिस प्रकार क्षेत्रीय दल अस्तित्व या सत्ता में आ रहे हैं। वह स्थिति भारतीय लोकतंत्र के लिए काफी घातक सिद्ध हो रही है। क्षेत्रीय दल अपनी क्षेत्रीय राजनीति में मस्जिद पकड़ मजबूत करने के लिए अपना ध्यान मात्र क्षेत्र ही तक रखते हैं। आज के परिपेक्ष में राजनीतिक विचारों में यह महत्वपूर्ण प्रश्न बना हुआ है कि क्या क्षेत्रीय दल भारतीय लोकतंत्र के लिए अभिशाप सिद्ध हो रहे हैं। भारत के अनेक राज्यों में क्षेत्रीय दलों की सरकारें कार्यरत हैं। जो इस प्रकार से जैसे जम्मू कश्मीर में नेशनल कांफ्रेंस हरियाणा में हरियाणा विकास पार्टी, इंडियन नेशनल लोकदल, पंजाब में अकाली दल, असम गण परिषद, , बिहार में राष्ट्रीय जनता दल व जनता दल यूनाइटेड, तमिलनाडु में डीएमके, आंध्र प्रदेश में तेलुगू देशम, महाराष्ट्र में शिवसेना, समाजवादी भारत के सभी राज्यों का विकास हो रहा है।

❖ **राजनीतिक अस्थिरता**–राजनीतिक स्थिति वर्तमान में जिस प्रकार केंद्र व राज्य में राजनीतिक अस्थिरता का दौर चल रहा है। उसकी काफी हद तक क्षेत्रवाद ही जिम्मेदार है। जिसके परिणाम स्वरूप सिंह के सैकड़ों क्षेत्रीय राजनीतिक दल अस्तित्व में आ गए हैं। जिससे किसी भी राष्ट्रीय दल को बहुमत नहीं मिल रहा है और अल्पमत वाली सरकारों का निर्माण हो रहा है जिसमें स्थायित्व का नितांत अभाव पाया जाता है जो कुछ समय बाद बालू के कारणों के सामान्य जाति है। और राष्ट्र को पुणे मध्यावधि चुनाव की ओर धकेला जाता है।

क्षेत्रीयवाद को रोकने के उपाय

भारतीय राजनीति में जिस प्रकार क्षेत्रीयवाद बढ़ रहा है। वह राष्ट्रीय एकता व अखंडता के लिए विषैले सर्प के समान है यदि इस को नहीं रोका गया तो राष्ट्र के लिए काफी घातक सिद्ध हो सकता है।

- सभी क्षेत्रों के लोगों को बिना किसी भेदभाव के समान सुविधाएं उपलब्ध करवाई जाए ताकि लोगों में ईर्ष्या व असंतोष नहीं फैले।
- यह सुनिश्चित किया जाए कि नियोजन का लाभ पिछड़े एवं गरीब लोगों को मिले तथा कुछ ही क्षेत्रों में धन का केंद्रीकरण नहीं हो।
- सभी उप सांस्कृतिक क्षेत्रों में संतुलित आर्थिक विकास की प्रभावी नीति पर अमल किया जाए।
- भाषाई विवाद का तुरंत समाधान किया जाए तथा आवश्यकता के अनुसार समान रूप से मान्यता दी जाए।
- केंद्रीय मंत्रिमंडल में सभी क्षेत्रों को समान रूप से प्रतिनिधित्व दिया जाए ताकि क्षेत्र विशेष में प्रतिनिधित्व के लिए असंतोष पैदा ना हो।

- केंद्र व राज्य सरकार के बीच सहमति एवं सामंजस्य का वातावरण पैदा किया जाए विचार–विमर्श और सम्मेलन की कूटनीति द्वारा पारस्परिक विष्वास प्रकट किया जाए और ऐसे अवसर उपस्थित न हो कि एक दूसरे के उनर कीचड़ उछालने की चेष्टा हो।
- जो क्षेत्र विकास की दृष्टि से पिछड़े हो उनके लिए अतिरिक्त स्रोतों की व्यवस्था करके उन्हें तेजी से समृद्ध बनाया जाए।

निष्कर्ष :

क्षेत्रीयवाद भारतीय समाज में राजनीति की जड़ों में गहराई तक पहुंचकर इस को कमजोर कर रहा है। और राष्ट्रीय एकता व अखंडता को खतरा पैदा हो रहा है। यदि हम राष्ट्र का बारीकी से विश्लेषण करेंगे तो हमें यह पाते हैं कि संपूर्ण राष्ट्र विभिन्न क्षेत्रों में बटा हुआ है। प्रत्येक क्षेत्र का आम व्यक्ति अपने क्षेत्र विशेष के हितों को पूरा करने के लिए तत्पर रहता है। क्षेत्रीयवाद के कारण आज हमारे राष्ट्र के समक्ष पर थकता बाद आतंकवाद जैसे ज्वलनशील समस्याएं पैदा हो रही है। आज आवश्यकता इस बात की है कि राष्ट्रीय एकता के लिए वातावरण तैयार किया जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. वर्मा, वी.पी. : मॉडर्न इंडियन पॉलिटिकल लक्ष्मीनारायण, आगरा, 1967।
2. धरमचंद जैन कैलाश दरोगा, आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतक, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 2019।
3. अली मुख्तारः भारतीय राजनीतिक विचारक, दूरस्थ षिक्षा निदेषालय, जैन विष्वभारती संस्थान, लाडनूं, 2020।
4. रामरतन, रुचि त्यागी, भारतीय राजनीतिक चिंतन, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, 2017।
5. सी.एम. सरस्वती, भारतीय राजनीतिक चिंतन, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, 2015।
6. ओमप्रकाश, राजनीतिक चिंतन की रूपरेखा, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, 2015।
7. ओम प्रकाश गाबा, भारतीय राजनीतिक विचारक, मयूर पेपरबैक्स, नोएडा, 2016।
8. पुष्पा बिरयानी व राजेष्वरी सक्सेना, भारतीय राजनीतिक विचारक, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
9. गुप्ता, आर. सी. : सोशियलिज्म, डमोक्रेसी एण्ड इंडिया, रामप्रसाद एण्ड संस आगरा, 1965।
10. रामवतार शर्मा, सुषमा यादव : भारतीय राजनीति ज्वलंत प्रश्न, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय दिल्ली विष्वविद्यालय, नई दिल्ली।
11. सुभाष कश्यप : भारतीय सरकार और राजनीति, रिसर्च, नई दिल्ली।
12. एम.पी. रॉय : भारतीय शासन एवं राजनीति, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर।